डेविड ऑसबरॉ की किताबें : एक विहंगम दृष्टि

❑ राजाराम भादू

''आम तरीका (पढ़ाने का) छात्र के कान में चिल्लाते रहने का है जैसे कि कोई कीप में पानी डाल रहा हो। और लड़के का काम जो कहा गया है उसे दोहरा देने भर का है । मैं चाहूंगा कि शिक्षक इस स्थिति में सुधार करे और सीधा उस दिमाग को अपनी सामर्थ्य के अनुसार काम में लेने के अभ्यास से आरंभ करे जिस का कि वह प्रशिक्षण कर रहा है । उसे चाहिये कि अपने शिष्यों से चीजों की जांच करवाये, चुनाव करवाये और उनके अपने बोध के अनुसार चीजों में फर्क करने दे । कभी कभी वह स्वयं भी ये सब करे। मैं नहीं चाहता कि वह (शिक्षक) स्वयं ही सब कुछ आरंभ करे और केवल वही बोलता रहे, बल्कि अपने शिष्य को भी मौका दे और उसकी बात सुने । सुकरात ; और उसके बाद आरसिसिलस पहले अपने शिष्यों को बोलने देते थे और फिर उनसे अपनी बात कहते थे । सिखाने वालों का प्रभुत्व बहुत बार सीखना चाहने वालों के लिए बाधा बन जाता है।'' डेविड ऑसबरॉ ने अपनी पाठ्यपुस्तक 'लेट'स डिस्कवर साइंस' की भूमिका में इस उक्ति को उद्धरित करते हुए लिखा था, ''यह उद्धरण शिक्षा जगत के किसी आधुनिक लेखक का नहीं है बल्कि आज से 400 वर्ष पहले मोन्टेन का लिखा है जो आज भी ऐसे विचार प्रस्तुत करता है जो हमारे बहुत से स्कूलों के लिए तो बिल्कुल नये हैं ।''

डेविड ऑसबरॉ द्वारा रचित पाठ्यपुस्तकों पर विचार करते हुए उनके शिक्षा-दर्शन को ध्यान में रखना बहुत जरूरी है और दुनियां के महान शिक्षा-चिंतकों की तरह डेविड भी मानते थे कि शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति का समेकित विकास है । शिक्षा का मूल्यवान प्रकार्य कैसे सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकता है- यही डेविड के शिक्षा प्रयोग की मूल चिंता है जिससे वे आजीवन सन्नद्ध रहे । उनके द्वारा रचित पाठ्यपुस्तकें इस शिक्षा-प्रयोग की बेहतरीन उपज हैं ।

चूंकि डेविड के लिए शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य बच्चों को उनकी सामर्थ्य के अनुसार बेहतरीन शिक्षा दे पाना था जिससे उनकी तमाम ऊर्जा और संभावनाओं को विकसित होने का मौका मिले- वे चीजों को समझ सकें, कह सकें, स्वयं को अभिव्यक्त कर सकें। इस तरह देखें तो हम यह कह सकते हैं कि डेविड का शैक्षिक उपक्रम व्यक्तित्व में तीन प्रमुख गुणों के विकास पर सर्वाधिक जोर देता है - सृजनशीलता, स्वाध्याय और सौंदर्यबोध । इसीलिए बच्चे की आरंभिक शिक्षा के तौर पर भी डेविड का शैक्षिक फलक अत्यंत व्यापक था, जिसमें भाषा-शिक्षण से दर्शन तक और संगीत से बागवानी तरह विविध क्षमताओं, कौशलों और कलाओं को समाहित किया गया था । पुस्तकों की इस शिक्षण-प्रक्रिया में अहम् भूमिका थी ।

डेविड के लिए शिक्षण-प्रक्रिया का एक प्रमुख चरण वहां जाकर पूरा हो जाता था जहां शिक्षार्थी स्वयं सीखने लगे, अपनी सर्जना को विकसित करे, जीवन और परिवेश के मूल प्रश्नों के खुद उत्तर खोज सके तथा प्रकृति और सौंदर्य का आस्वादन कर सके। इसलिए डेविड के यहां शिक्षा के आरंभिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा जैसे काल विभाजन नहीं हैं । शिक्षार्थी इस मुकाम तक बिना शिक्षक और पुस्तकों की मदद के नहीं पहुंच सकता । इस प्रक्रिया में पुस्तकें दुहरी भूमिका निभाती हैं :

- पाठ्य-पुस्तकों के रूप में सीखने और अभ्यास की प्रक्रिया का माध्यम
- स्वतंत्र रूप में ज्ञानार्जन या सौंदर्यबोध के विकास हेतु
- स्वाध्याय का माध्यम ।

भारत में शिक्षा के नियोजन को डेविड सख्त आलोचनात्मक नजरिये से देखते थे । शिक्षा का अधिक्रमिक तंत्र शहरी अभिजात वर्ग का वर्चस्व स्थापित करता है । एक ऐसी शिक्षा-प्रणाली जो अधिकांश ग्रामीण बच्चों को प्राथमिक शिक्षा पूरी करने से पहले ही शिक्षा-धारा से बाहर कर देती थी । डेविड के लिए 'शिक्षा के ग्रामीण पाठ्यक्रम' का कोई अर्थ नहीं था। वे इसे 'ग्रामीण आबादी को शिक्षा से महरूम रखने' की पांच प्रतिशत शहरी लोगों की साजिश मानते थे । उनका आरोप था कि शिक्षा का पाठ्यक्रम व समूची योजना पांच प्रतिशत शहरी संभ्रान्त वर्ग के हितों को ध्यान में रखकर तैयार की जाती है ।

जब डेविड पर यह आरोप लगने की बात कही गयी कि वे बच्चों को गांव से दूर कर रहे हैं तो उनका जबाव था, ''मैं लोगों

को चालाकी से प्रभावित करने के लिए यहां नहीं हूँ'' । यदि गांव के बच्चे का दृष्टिकोण पढ़ाई के बाद मोहनजोदड़ो से वर्तमान और नीलबाग से फ्रांस तक व्यापक बनता है तो उसे अपनी जिन्दगी के मसलों पर खुद निर्णय लेने का अधिकार है । डेविड के शिक्षा-दर्शन में गांव-शहर के बच्चों के लिए कोई भेद नहीं था। उनकी पुस्तकें भी इसका प्रमाण हैं ।

डेविड को बच्चों की जन्मजात संभावना पर बहुत भरोसा था। वे मानते थे कि बच्चे बहुत जिज्ञासु होते हैं, उन्हें खेल बहुत पसंद आते हैं और वे खेलने सहित विभिन्न कामों में भरपूर आनन्द लेते हैं । जब वे अपनी क्षमताओं को पहचान लेते हैं तो नये-नये कौशल अर्जित करने की कोशिश करते हैं । डेविड की मान्यता थी ''मूलत: सबसे जरूरी बात है - बच्चों में सीखने की ललक पैदा होना, उसके बाद वे स्वत: सीखने-पढ़ने लगेंगे । इस मंतव्य से डेविड ने स्कूल में नये आने वाले बच्चों के लिए कई पुस्तकें तैयार की हैं । चूंकि बच्चों में सीखने की ललक पैदा करने और पुस्तकों को कैसे काम में लिया जाये यह बताने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है, इसलिए इन पुस्तकों में डेविड, शिक्षक से गंभीर संवाद करते हैं ।

इस प्रकार पाठ्यपुस्तक के रूप में पुस्तक सीखने का माध्यम बनती है । यह बच्चे में सीखने की ललक पैदा करने, उसे बनाये रखने और सीखने में उत्प्रेरण का काम करती है । शिक्षक की भूमिका मुख्यत: यह सुनिश्चित करना है कि पुस्तक का सही उपयोग हो सके । कुल मिलाकर पाठ्यपुस्तकें सीखने-सिखाने के एक माध्यम भर हैं । लेकिन पाठ्यपुस्तकें बच्चे को पुस्तकों के वृहत् संसार की ओर भी ले जाती हैं। इस तरह ये सेतु-निर्माण का काम करती हैं।

डेविड पाठ्यपुस्तकों के महत्व और सीमाओं- दोनों को ध्यान में रखते हैं । शिक्षा का पूरा उपक्रम केवल पाठ्यपुस्तकों के भरोसे नहीं पूरा होता, इसलिए वे ऐसी अनेक गतिविधियों को शिक्षा-प्रक्रिया में अनिवार्य मानते हैं जो बच्चों में सृजनात्मकता और सौंदर्यबोध का विकास करती हैं । छोटे बच्चों के लिए इन गतिविधियों की एक और उपादेयता इनका आनंददायी होना है । बच्चों में कुछ भी खुद रचने का शौक जन्मजात होता है । उन्हें गाना, नाचना, नाटक करना सब पसंद होता है । आमतौर पर इन्हीं आनन्ददायी गतिविधियों के क्षणों में ही बच्चों में शिक्षा से सच्चा लगाव पैदा होता है । साथ ही ऐसे कौशल का विकास, आनंद और सफलता, बच्चे में शिक्षा के प्रति रुचि, रुझान और अभिप्रेरण का वह मार्ग खोल देते हैं जो कि शैक्षिक प्रक्रिया का अनिवार्य घटक है ।

बच्चा अपनी सृजनशीलता और सौंदर्यचिंतन में स्वतंत्र रूप

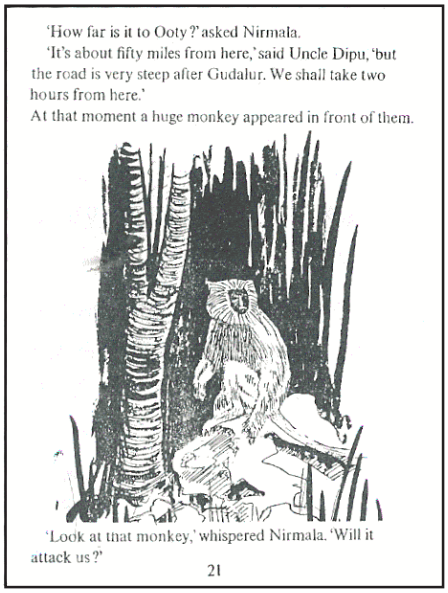
'How far is it to Ooty?' asked Nirmala.
'It's about fifty miles from here,' said Uncle Dipu, 'but the road is very steep after Gudalur. We shall take two hours from here.'
At that moment a huge monkey appeared in front of them.
'Look at that monkey,' whispered Nirmala. 'Will it attack us?'
21

से पुस्तकों की मदद लेने लगे तो यह शैक्षिक उपक्रम की अहम् उपलब्धि है । डेविड कहते हैं, ''मेरे विचार में ..... एक बच्चे को आप जब पढ़ना सिखा देते हैं तो आपका काम पूरा हो जाता है । अब तीसरा काम बचा रहता है- उसे अधिक से अधिक जानने के लिए उत्साहित करना । असल चीज यही है, कोई भी वयस्क यदि पढ़ना जानता है तथा अधिक पढ़ने सीखने-जानने की ललक उसमें है तो वह जो चाहे सीख सकता है'' ।

इसलिए डेविड शिक्षण में शिक्षक की भूमिका को अलग तरह से देखते हैं तो यह स्वाभाविक ही है : ''शिक्षक के बारे में मेरी अवधारणा बहुत भिन्न है । एक शिक्षक का काम पढ़ाना नहीं बल्कि ऐसा वातावरण तैयार करना है जिसमें प्रत्येक बच्चा अपने स्तर पर चीजों को सीख सके । सामान्यत: हम एक शिक्षक की कल्पना एक ऐसे व्यक्ति के रूप में करते हैं जो बहुत कुछ जानता है और इस जानकारी को दूसरे तक पहुंचाने का काम करता है । .....मूल बात बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में शरीक करना है'' । इस प्रकार शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक की है ।

शिक्षा को लेकर डेविड के सोच और मौजूदा शिक्षा-प्रणाली की विसंगति को समझकर ही डेविड द्वारा रचित पुस्तकों का महत्व आंका जा सकता है । डेविड की शिक्षा-दृष्टि शिक्षा-नियोजकों से मेल नहीं खाती । शिक्षा-नियोजक शिक्षा के मार्फत ऐसे लोगों को तैयार करते हैं जिनकी तंत्र को जरूरत है । इसके लिए वे विद्यार्थी को कुछ सूचनाओं से लैस करना चाहते हैं, इससे पूर्व उसे किसी तरह पढ़ना लिखना सिखा दिया जाता है ।

डेविड मानते थे कि मौजूदा शिक्षा अब सूचनाओं तक सिमट कर रह गई है । पहली जमात में बच्चे के दाखिले से लेकर बी.ए.

पास होने तक, उसकी शिक्षा-यात्रा में पूरा जोर, बेहतर से बेहतर गति के साथ खंड-खंड सूचनाओं को कंठस्थ कर लेने, फिर उसी तेजी से सीखी हुई इन सूचनाओं को भूलते जाने पर होता है। शिक्षा में सीखे हुए ज्ञान की प्रामणिकता के लिए मूल्यांकन एक तकनीकी अनिवार्यत्ता है, तो उसके लिए इस प्रणाली में ऐसी ही मूल्यांकन प्रविधि विकसित कर बच्चों पर थोप दी गई है ।

डेविड इस मूल्यांकन-पद्धति पर प्रहार करते हुए कहते हैं चूंकि अनेक सृजनशील गतिविधियां और कौशल ऐसे हैं जिनका मूल्यांकन इस प्रविधि में कर पाना संभव नहीं है, इसलिए उन्हें उपेक्षित कर दिया गया है । कला, शिल्प, संगीत, नृत्य, नाटक, गायन, बागवानी, और विमर्श जैसे क्षेत्र लगभग नकार दिये जाते हैं सूचना-प्रधान होने के कारण मूल्यांकन पाठ्यपुस्तकों का भी चरित्र और भूमिका बदल देता है । ''बच्चे जब अपनी रचनात्मक ऊर्जा के चरम पर होते हैं, बारह-तेरह साल की उम्र में, परीक्षा के दबाव में उन्हें रचनात्मकता के उन रास्तों को बंद करना पड़ता है - क्योंकि परीक्षा को बहुत अनिवार्य माना जाता है ।''

पाठ्यपुस्तकों का इस परीक्षा-प्रणाली ने किस तरह स्वरूप बदल डाला है और डेविड पाठ्यपुस्तकों को लेकर कैसे उससे भिन्न सोचते हैं, इस संदर्भ में डेविड को उद्धरित करना बेहतर होगा : ''.... साधारणत: विज्ञान की पुसतकों में एक तरफ मेंढ़क का चित्र बना होगा और दूसरी तरफ बताया गया होगा कि मेंढ़क के चार टांगे होती हैं, एक जीभ होती है और वह कीट-पतंगों कोखाता है। और पृष्ठ के पिछले भाग पर सवाल होंगे , 'एक मेंढ़क के .... टांगें होती हैं । अब बच्चा खाली स्थान को भर कर खुश होगा जैसे उसने कोई बड़ा तीर मार लिया और वह अगले पृष्ठ की तरफ बढ़ जायेगा । मेरी पुस्तकें इससे भिन्न हैं । उनमें बच्चों से चीजों को तलाश कर उनका अवलोकन करने और फिर उसे दर्ज करने को कहा जाता है। इसी तरह आगे बढ़ते हुए उनसे अपने अवलोकन अथवा अपने द्वारा दर्ज की गई बातों का विश्लेषण करने को कहा जाता है । विज्ञान में बहुत सारे पहलू होते हैं और उसमें बहुत ज्यादा विविधता की गुंजाइश रहती है । इन दिनों शिक्षा में सही उत्तर बताने को बहुत बड़ी बात मान लिया गया है । मेरी पुस्तकें इस अर्थ में अलग हैं कि उनमें सवालों को खुला छोड़ दिया गया है और वे सही उत्तर से ज्यादा महत्त्व खुली बहस को बढ़ावा देने को देती हैं ।''

प्रश्नोत्तरी का यह उथला क्रम शिक्षा के आरंभिक स्तर पर पाठ्यपुस्तकों को माध्यम के बजाय लक्ष्य में बदल देता है । अर्थात पाठ्यपुस्तक के तथ्यों को कंठस्थ कर लेना सफलता की कुंजी है, सारे सही उत्तर पाठ्य पुस्तक में मौजूद हैं और उससे बाहर कुछ नहीं है । लेकिन आगे चलकर 'सफलता की कुंजियां' पाठ्यपुस्तक का स्थानापन्न हो जाती हैं और पाठ्यपुस्तक जो शिक्षार्थी को स्वतंत्र पुस्तकों की ओर आकर्षित कर सकती थीं, अब खुद पृष्ठभूमि में चली जाती हैं । इस प्रसंग में डेविड का यह दृष्टांत देखें ''कुछ लोगों ने वैकल्पिक विषय अंग्रेजी लिया हुआ है । उनके पाठ्यक्रम में कुछ पुस्तकें हैं, मान लीजिए कि 'रिचर्ड थर्ड' और 'टेल ऑफ टू सिटीज' । कोई शिक्षार्थी इन पुस्तकों को नहीं पढ़ेगा । पढ़ना तो दूर वे उन्हें खरीद कर भी नही लाएंगे । वे इन पुस्तकों के बारे में कुछ निबंध याद कर लेंगे और परीक्षा में वही लिख आयेंगे । अब जो लोग पाठ्यक्रम बनाते हैं; परीक्षा लेते हैं और जो पढ़ाते हैं वे सब खुश हैं कि छात्र साहित्य पढ़ रहे हैं जबकि वास्तव में ऐसा कुछ हो ही नहीं पा रहा ।''

डेविड कोई ऐसे पाठ्यपुस्तक रचयिता नहीं हैं जो शिक्षा जगत की जमीनी हकीकत से दूर अपने अध्ययन कक्ष में बैठकर और काल्पनिक बच्चों को ध्यान में रखकर झटपट किताब लिख डालते हैं । कहना न होगा कि ऐसे लोगों का पुस्तक उत्पादन शिक्षा प्रणाली की मांग और पूर्ति व्यवस्था के अन्तर्गत होता है । इनके विपरीत डेविड एक ऐसे शिक्षा-चिंतक शिक्षक और लेखक थे जो जीवन पर्यन्त शिक्षा-प्रयोग से जुड़े रहे । वे बच्चों में ऐसी जीवन-दृष्टि के विकास के लिए तत्पर रहे, जिससे बच्चे जीवन और जगत के बारे में स्वयं अपनी धारणाएं निर्मित करते हुए स्वतंत्र ज्ञानार्जन करते रह सकें । लेकिन डेविड की रची ऐसी पाठ्य पुस्तकों को उत्कृष्टता के बावजूद उतनी अहमियत नहीं मिली, जो मिलनी चाहिए थी ।

एक तो, इन पाठ्यपुस्तकों की सफलता के लिए यह जरूरी था कि शिक्षक तथ्यों को रटने की बजाय चीजों को समझने और समझकर सीखने को प्रोत्साहित करने वाला दृष्टिकोण चुने और मार्गदर्शक की अपनी विशिष्ट भूमिका को पहचाने । लेकिन शिक्षक अक्सर डेविड की पाठ्यपुस्तकों को इस रूप में प्रयुक्त करने में असफल हुए । डेविड का एक वृतान्त इस विडंबना को व्यक्त करता है : ''मैंने पर्यावरण संबंधी कुछ पुस्तकें भी बच्चों के लिए लिखी हैं ----- बच्चों से पर्यावरण अध्ययन की अपेक्षा की गई है जबकि शिक्षक नहीं चाहते कि बच्चे पर्यावरण का अध्ययन करें। वे कुल मिलाकर इतना ही चाहते हैं कि बच्चे पूरे मन से पुस्तकों को याद कर लें । यहां तक कि बहुत अच्छे माने जाने वाले शिक्षक भी किसी पाठ्यपुस्तक का नाश करके रख देते हैं । दो साल पहले मैं दिल्ली आया तो मेरे एक दोस्त ने बताया कि उसकी मित्र स्कूल में पढ़ाती है और वहां मेरी पुस्तकें ही लगी हुई हैं तो वह मुझसे बात करना चाहती है । मैंने कहा, ठीक है, उन्हें बुलवा लो । वह नाश्ते पर आयीं, तब मैं ने पूछा कि पहले तो आप यह बताइये कि आप स्कूल में क्या करती हैं ?

मेरी पुस्तक में पेड़ों के बारे में एक अध्याय है जिसमें कहा गया है कि स्कूल के रास्ते में आप कितने तरह के पेड़ों को देखते हैं ? क्या आप उनमें से किसी पेड़ का नाम जानते हैं ? क्या आपको उन पर पत्ते दिखाई देते हैं ? आप उन पत्तों को अपनी पुस्तक में बना कर देखिए, आदि । मैंने उनसे कहा कि आप मुझे ठीक-ठीक बताइये कि कक्षा को आप कैसे पढ़ाती हैं ? तब उन्होंने जबाव दिया - 'मैं किताब लेकर पढ़ती हूँ, 'पेड़' । आप कितनी तरह के पेड़ देखते हैं ? इसके बाद में ब्लैक बोर्ड पर पेड़ों के नाम लिख देती हूँ और बच्चे अपनी कापी में उन्हें उतार लेते हैं और उन्हें याद कर लेते हैं । फिर अगले दिन मैं पूछती हूँ कि बताइये, आपने कौन-कौन से पेड़ देखे ? विश्वास नहीं होता । यह स्थिति तो दिल्ली के प्रतिष्ठित स्कूल की है । आप सोच सकते हैं कि दूसरे स्कूलों में क्या हुआ होगा ?''

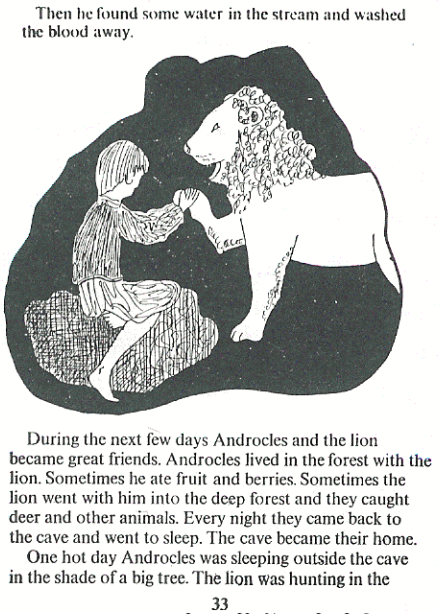
Then he found some water in the stream and washed the blood away.

During the next few days Androcles and the lion became great friends. Androcles lived in the forest with the lion. Sometimes he ate fruit and berries. Sometimes the lion went with him into the deep forest and they caught deer and other animals. Every night they came back to the cave and went to sleep. The cave became their home.

One hot day Androcles was sleeping outside the cave in the shade of a big tree. The lion was hunting in the

33

शिक्षक इस प्रणाली के पुर्जे हैं । वे डेविड की पुस्तकों को सही तरह प्रयुक्त नहीं कर पाये, इसलिए वे पुस्तकें स्कूलों में बहुत 'सफल' नहीं हो पायीं । फलत: डेविड की पर्यावरण और विज्ञान पर लिखी पुस्तकों की पुस्तक बाजार में मांग घट गई, जबकि ये किताबें, खासकर विज्ञान की पुस्तकें उन्होंने बहुत उम्मीद से लिखी थीं । तदनन्तर अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तकों में डेविड ने चले आ रहे ढर्रे को तोड़ने का बहुत ज्यादा प्रयास नहीं किया, तथापि ये पुस्तकें विशिष्ट हैं । रोजलिन से साक्षात्कार में डेविड ने अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकों के मामले में अपनी इस सीमा को गहरी वेदना के साथ स्वीकार किया है । ''इनके लिए बाजार को भी ध्यान में रखना पड़ता है, वर्ना न कोई उन्हें पढ़ेगा, न स्कूलों में लागू की जायेंगे, और अगर किसी पुस्तक को कोई स्कूल लागू नहीं करता तो प्रकाशक उसे बाजार से निकाल बाहर कर देते हैं । मेरी पुस्तकें भी एक तरह का समझौता तो हैं ही। आप वैसी पुस्तक नहीं लिख सकते, जैसी की आप लिखना चाहते हैं क्योंकि कोई उसे खरीदेगा नहीं'' ।

आज भी वही शिक्षा-प्रणाली और मजबूती से कायम है जिसके प्रतिकार में डेविड ने बहुआयामी शैक्षिक हस्तेक्षेप किया था, किन्तु डेविड की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशन-बाजार से कब की बाहर हो चुकी हैं । ऐसे में, मोन्टेन की वह उक्ति फिर याद आ रही है जिससे हमने अपनी बात शुरू की थी । डेविड ने इसे उस समय (1974) जितना प्रासंगिक पाया था, तब से दो दशक से ज्यादा समय गुजर गया है । और यह उतनी ही नयी और उन्मेषकारी है ।

● ● ●

डेविड ऑसबर्ॉ ने विपुल मात्रा में पाठ्य पुस्तकों और पाठ्येत्तर शिक्षण-सहायक सामग्री की रचना की है । ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस उनकी पुस्तकों का एकमात्र प्रकाशक रहा, हालांकि उन्होंने सरकारी पाठ्यपुस्तक प्रकाशनों के लिए भी कार्य किया । यहां उनकी कुछ प्रमुख पुस्तकों ओर पुस्तक-शृंखलाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है ।

ब्लैक बोर्ड का उपयोग

बच्चों को भाषा(अंग्रेजी) सिखाने में ब्लैकबौर्ड के उपयोग पर डेविड ऑसबर्ॉ ने एक पुस्तिका 'हाऊ टू यूज द ब्लैक बोर्ड इन टीचिंग इंगलिश' तैयार की, जिसमें स्वयं डेविड के बनाये रेखांकन हैं । इस किताब की तकनीक को समझाते हुए उन्होंने लिखा है कि भाषा सिखाने के शुरूआती वर्षो में ब्लैकबोर्ड की महत्वपूर्ण भूमिका है । लेकिन इसके लिए जरूरी है कि शिक्षक द्वारा ब्लैकबोर्ड पर बनाये गये रेखांकन अच्छे हों । ये रेखांकन बोर्ड पर जल्दी बनाये जायें और इन्हें जैसा बताया जा रहा है वैसे दिखें भी । इससे भाषा सिखाने में कैसे मदद मिलेगी, यही इस पुस्तिका का विषय है ।

डेविड ऑसबर्ॉ ने पुस्तिका की भूमिका में लिखा है कि चित्रकार तैयार करना इसका उद्देश्य नहीं है । बहुत सारे रेखांकन ऐसे हैं जिनके लिए किसी विशिष्ट कौशल की आवश्यकता नहीं है, बल्कि थोड़े से अभ्यास की जरूरत है । कोई भी शिक्षक कुछ समय के नियमित अभ्यास से यह कौशल अर्जित कर सकता है ।

पुस्तक में सिद्धांतत: यह तकनीक बतायी गयी है- 'कभी डस्टर प्रयुक्त नहीं करें, (जब तक कि रेखांकन का उपयोग पूरा नहीं हो जाता और आपको दूसरा रेखांकन बनाने के लिए स्थानकी आवश्यकता न हो ।) इसके लिए शिक्षक पुस्तक में निर्दिष्ट तरीके से एक के बाद दूसरी रेखा खींचकर अभ्यास कर सकते हैं । पुस्तक में निर्मित रेखांकनों के साथ यह सिद्धांत है - 'इन्हें मिटायें नहीं'। डेविड के विद्यालय की शिक्षण सामग्री में भी रबर नहीं होता था ।

भाषा- शिक्षण में प्रयुक्त बहुत सारे रेखांकनों का संपूर्ण दृश्य साम्यता की बजाय प्रतीकात्मक अर्थ होता है । लिखित वर्ण से पहले आकृति सीखना बच्चे के लिए आसान होता है । बच्चे जल्दी ही इन प्रतीकों को सीख लेते हैं, यदि कक्षा में लगातार इन प्रतीकों का अभ्यास कराया जाये । इस तरह बच्चों के सीखने का समय भी बचता है।

ब्लैक बोर्ड पर सीधे किसी शब्द को सिखाना उतना बेहतर अभ्यास नहीं है जितना कि बॉक्स बनाकर उसमें शब्द का रेखांकन करके सिखाया जाये । बच्चों के सीखनेकी जांच और दोहरान में भी रेखांकन शिक्षक के लिए काफी उपयोगी हो सकते हैं ।

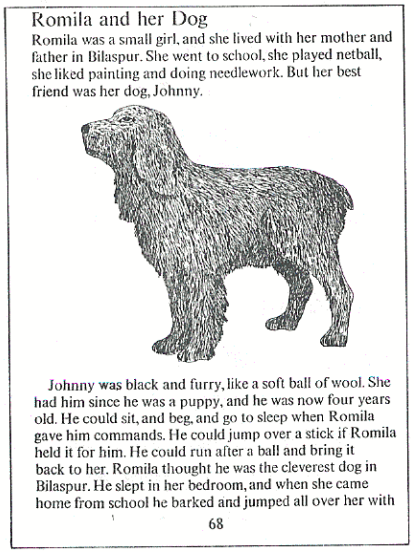
Romila and her Dog

Romila was a small girl, and she lived with her mother and father in Bilaspur. She went to school, she played netball, she liked painting and doing needlework. But her best friend was her dog, Johnny.

Johnny was black and furry, like a soft ball of wool. She had him since he was a puppy, and he was now four years old. He could sit, and beg, and go to sleep when Romila gave him commands. He could jump over a stick if Romila held it for him. He could run after a ball and bring it back to her. Romila thought he was the cleverest dog in Bilaspur. He slept in her bedroom, and when she came home from school he barked and jumped all over her with

68

ब्लैकबोर्ड पर रेखांकन के लिए शिक्षक को शीघ्र और स्पष्ट लिखने का भी अभ्यास करने की जरूरत है । पुस्तक में दिए गए विभक्ताक्षर और संयुक्ताक्षरों के लिए प्रयुक्त रेखांकन इसमें शिक्षक की काफी मदद कर सकते हैं । गति, स्पष्टता और सुंदरता ही इन रेखांकनों की प्रमुख विशेषता हो सकती है ।

पुस्तक के अनुक्रम में इन रेखांकनों को कई उपशीर्षकों में रखा गया है । इन उपशीर्षकों के अन्तर्गत आने वाले रेखांकनों पर लेखक की ओर से संक्षिप्त टिप्पणी दी गयी है । पुस्तक के अंत में रेखांकनों की विवरणी दी गयी है ।

इटैलिक कॉपीबुक्स

यह पुस्तक शृंखला बच्चों को अंग्रेजी भाषा में सुलेख के अभ्यास के लिए तैयार की गयी है । बच्चे शुरू में देखकर लिखना सीखते हैं। शुरू की दो पुस्तकें पैंसिल की मदद से अक्षरों को अलग-अलग लिखने के लिये हैं जबकि अगली पुस्तकों में अक्षरों को मिलाकर लिखने के लिए अभ्यास दिए गए हैं । पुस्तकों में शिक्षक के लिए निर्देश है कि वे पहले अक्षरों व शब्दोंकी बनावट को ब्लैक-बोर्ड पर बच्चों को समझा दें ।

सोचें और करें

'थिंकिंग एण्ड डूइंग' पुस्तक बच्चों को सोचने और करने के लिए प्रेरित करती हैं । जहां बहुत सारी ऐसी पुस्तकें, विशेषकर शुरुआती कक्षाओं के लिए तैयार की गई किताबें, बच्चों को रट कर सीखने अथवा नकल करके सीखने या ऐसे ही किसी ढर्रे को ध्यान में रखकर लिखी जाती हैं, उनसे विपरीत यह पुस्तक बच्चों को विचार और क्रियाशीलता के लिए अनेक अभ्यासों से सुसज्जित है।

यह पुस्तक ऐसे बच्चों के लिए है जिन्होंने अभी स्कूल आना शुरू किया है और पुस्तक से उनका वास्ता पहली बार पड़ा है । पुस्तक में बच्चे को अनेक कौशल विकसित करने के लिए अवसर जुटाए गये हैं, साथ ही बच्चा विभिन्न अनुशासनों से संबंधित अवधारणाएं निर्मित कर सकता है ।

पहला ही कौशल जो बच्चे को सीखना होता है, वह पैंसिल का प्रयोग है । बच्चा नकल करके, बिन्दुओं पर पेंसिल फेरकर, पहेलियां सुलझाकर और इस पुस्तक में दी गयी ऐसी ही अनेक चीजों द्वारा यह कौशल अर्जित कर सकता है ।

साथ ही, शिक्षा आरंभ करने के शुरूआती दिनों में ऐसी अवधारणाएं निर्मित करना बहुत जरूरी है जो आगे की शैक्षिक प्रक्रियाओं से जुड़ जाती हैं । पुस्तक में स्थानिक संबंधों, पढ़ने के प्रक्रिया के लिए जरूरी भेद करने और अवधारणात्मक संबंधों को प्रचुर अभ्यास दिये गये हैं ।

पुस्तक अनेक गणितीय अवधारणाओं की निर्मिति में भी मदद करती है, इसमें एक से दस तक की संख्याएं , संख्याओं के क्रम, ज्यामितीय आकृतियां और विभिन्न आकारों से अवगत कराया गया है ।

पुस्तक बच्चे के निकट परिवेश के बारे में कुछ मात्रामें वैज्ञानिक जानकारियां देने का आधार रखती हैं । यह बच्चों को पेड़ व पत्तियों, फल व सब्जियों और अपने आसपास की ऐसी अनेक चीजों को देखने के लिए प्रेरित करती हैं जो उसे आगे दुनियां को समझने के लिए जरूरी तार्किक समझ और अवधारणाएं निर्मित करने में सक्षम बनाती है ।

पुस्तक में बच्चे को साधारण हस्तकला, मिट्टी व कागज के उपयोग, और रोजमर्रा की चीजों से कोलाज और मॉडल इबनाने के बारे में सिखाया गया है । 'आओ बात करें ' पाठों में दिये चित्रों के आधार पर शिक्षक बच्चों से बातचीत कर सकते हैं । शैक्षिक खेलों के द्वारा ध्यान से देखने और याद रखने की क्षमताएं विकसित की जा सकती हैं ।

पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ में शिक्षक की मदद के लिए संक्षिप्त टिप्पणी दी गयी है लेकिन यह ध्यान रखा गया है कि शिक्षक को निर्देशों में ज्यादा नहीं बांधा जाये ताकि उसे स्वयं नये तरीके खोजने और प्रत्येक पृष्ठ को अपनी तरह ब्लैकबोर्ड पर समझाने की गुंजाइश रहे ।

बच्चों के पाठ्यक्रम में सामान्यत: ऐसी रुचिकर चीजों की अनुपस्थिति मिलती है और प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाई छोड़ने वाले बच्चों की भारी तादाद का एक प्रमुख कारण यह भी है । यद्यपि इस पुस्तक की योजना औपचारिक कक्षाओं को ध्यान में रखकर तैयार की गई है लेकिन अनौपचारिक कक्षाओंमें भी पुस्तक उतनी ही उपयोगी हो सकती है, चाहे वे दो-तीन घंटे चलने वाली साध्य कक्षाएं हों या सामान्य शाला के लिए पूरक शिक्षा कार्यक्रम।

जो अभिभावक अपने छोटे बच्चों में चिंतन के विकास के इच्छुक हैं और उन्हें सृजनात्मक गतिविधियों से संबद्ध करना चाहते हैं, वे भी इस पुस्तक का स्वतंत्र इस्तेमाल कर सकते हैं ।

स्प्रिंग रीडर्स

बच्चों को अंग्रेजी सिखाने के लिए डेविड ऑसबर्न ने 'स्प्रिंग रीडर्स' शृंखला की आठ पुस्तकें तैयार की । इन किताबों की योजना भारतीय विद्यालयों की विभिन्न श्रेणियों को ध्यान में रखकर बनायी गयी थी । इन किताबों पर भाषा के पाठ्यक्रम, कार्य-पुस्तिकाओं की एक अच्छी शृंखला और शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कराये जाने वाले अभ्यासों के साथ काम किया जाना था ।

इन पुस्तकों की विषयवस्तु रुचिकर है जिसे रंगीन चित्रों से सजाया गया है । शुरूआती किताबों में ध्वनि प्रयोगों का पर्याप्त अभ्यास कराया गया है । इस शृंखला का प्रथम उद्देश्य तो बच्चों को अंग्रेजी पढ़ना सीखने और इसे पढ़ने में आनंद का अनुभव कराना है । हालांकि इसके लिए यह जरूरी है कि पहले शिक्षक पाठों में आने वाले शब्द और उनकी संरचना से बच्चों को मौखिक रूप से अवगत करा दें । शिक्षक किन्हीं वस्तुओं, चित्रों और क्रियाकलापों के जरिये शब्द-संरचनाओं का सार्थक वाक्योंमें प्रयोग करके बतायें।

शुरुआती भाषा-शिक्षण श्यामपट्ट के जरिये कराया जा सकता है । देखो और बोलो शब्दों का परिचय उपयुक्त चित्रों द्वारा कराया जाये और बच्चे किताब में इन्हें पढ़ें, उससे पहले ही शब्द की ध्वनि भी समझा दी जाये ।

इन किताबों की पाठ्य वस्तु विविध है - भारतीय लोक कहानियों, महाकाव्यों की कहानियों एवं विश्व साहित्य के समृद्ध खजाने से बच्चों के लिए रचनाओं का चयन किया गया है । किताबों में कुछ पाठ मनोरंजन के लिए हैं तो कुछ बच्चों को चिंतन हेतु प्रोत्साहित करने के लिए । प्रत्येक पाठ में विषयवस्तु आधारित प्रश्न और भाषा अभ्यास हैं ।

'स्प्रिंग रीडर्स' शृंखला की छठी से आठवीं पुस्तकें पहले की पुस्तकों के काम को आगे बढ़ाने वाली तो हैं ही लेकिन पढ़ने के क्षेत्र को धीरे-धीरे व्यापक बनाती हैं । छठी पुस्तक में तो बहुत सारे पाठ साधारण ही रखे गये हैं । सातवीं और आठवीं पुस्तकों के गद्य और पद्य दोनों में छात्रों को स्वतंत्र लेखन से अवगत कराया गया है ।

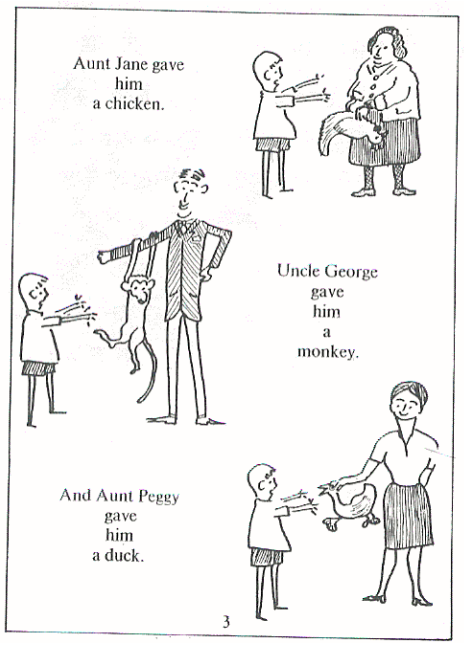

सातवीं पुस्तक में बच्चों के लिए विख्यात पुस्तकों से अंशों का चयन किया गया है । आठवीं पुस्तक में विश्वसाहित्य से गद्य-पद्य रचनाओं का चयन किया गया है । इन रचनाओं के चयन के दो आधार रहे हैं : पहला, विविध लेखकों के साहित्य से रुचिकर रचनाएं सुलभ कराना और दूसरा बच्चों की पढ़ने की भूख को शांत करते हुए उन्हें ख्यात रचनाकरों की मूल पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना ।

इन तीनों पुस्तकों में संदर्भ प्रश्न नहीं दिए गए हैं, बल्कि शिक्षकों से यह अपेक्षा की गई है कि वे बच्चों की समझ के स्तरानुसार उनसे अभ्यास करायें ।

ये पुस्तकें 'भाषा की सामग्री न होकर पठन-सामग्री ही है, इसलिए यह सलाह दी गयी है कि इन्हें बच्चों को अच्छे से भाषा -शिक्षण पाठ्यक्रम के साथ जोड़कर पढ़ाया जाये और साथ ही साथ खूब सारे मौखिक और लिखित अभ्यास कराये जायें ।

स्प्रिंग रीडर्स कार्य-पुस्तिकाएं

'स्प्रिंग रीडर्स पुस्तक श्रृंखला का शिक्षकों ने व्यापक स्वागत किया तो स्प्रिंग रीडर्स की कार्य पुस्तिकाएं (वर्क बुक्स) तैयार की गयी । कार्य-पुस्तिकाओं में बच्चों के लिए पढ़ने-लिखने के अभ्यास प्रचुर मात्रा में दिए गए । चूंकि देखकर लिखने के अभ्यास तो शुरू में ही करा दिए जाते हैं, इसलिए यहां बच्चों को शब्द और चित्रों की मदद से स्वयं अपने वाक्य लिखने केलिए प्रेरित किया गया है। बच्चों द्वारा स्वयं लिखने का अभ्यास और सृजनात्मक लेखन भाषा और व्याकरण सिखाने के सबसे कारगर तरीके हैं । कार्यपुस्किओं में वाक्य रचना, व्याकरण और वाक्य विन्यास यानी भाषा संरचना सिखाने के लिए प्रचुर मात्रा में अभ्यास दिए गए हैं ।

पुस्तिकाओं के अंत में शिक्षक के लिए निर्देशात्मक टिप्पणी दी गयी है । उन के लिए पहला सुझाव यह है कि वे हर पाठ पुस्तिका में कराने से पहले बच्चों से मौखिक कक्षा में करवा लें । दूसरा सुझाव यह है कि कार्य पुस्तिका में बच्चे द्वारा किये गये काम को जांचने के बाद अभ्यास-पुस्तिका में एक बार फिर से करायें ।

बच्चे को वाक्य रचना के लिए जो उत्प्रेरक शब्द-बंध और चित्र दिए गये हैं, शिक्षक कुछ वैसे और उत्प्रेरक जैसे पहेली इत्यादि काम में ले सकते हैं । जो बच्चे आगे चल रहे हैं उनके लिए ऐसे अभ्यास बहुत उपुयक्त होंगे ।

आओ, विज्ञान खोजें

'आओ विज्ञान खोजें' (लेट्'स डिस्कवर साइंस) श्रृंखला की पुस्तकें बच्चों में अपने आप सीखने के बुनियादी कौशल के विकास में पर्याप्त मदद करती है । ऐसी अनेक चीजें हैं जो बच्चे अपने आप सीख सकते हैं । बच्चों को यथासंभव ऐसे विचार दिए जा सकते हैं जो उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सोच का निर्माण कर सकें । इस तरह के पाठ्यक्रम की प्रकृति में प्रतिस्पर्धा और श्रेणीकरण को स्थान नहीं दिया जा सकता। बच्चों के वैज्ञानिक खोजों के रोमांच का आनंद लेने और अन्य प्रयोगों के लिए प्रोत्साहन इस दिशा में महत्वपूर्ण काम है । इसके लिए कक्षा की प्रत्येक गतिविधि में समूह-शिक्षण को अनिवार्य स्थान दिया जाना चाहिए।

पुस्तक श्रृंखला की भूमिका में कहा गया है कि जब बच्चों को महत्वपूर्ण वैज्ञानिक अवधारणा सिखानी है तो जरूरी हो जाता है कि दूसरी ऐसी गैर-वैज्ञानिक अवधारणा को तोड़ा भी जाये जो प्रचलित पहलुओं के जरिये उसके मस्तिष्क में जगह बनाये हुए है।

इस तरह का एक विचार यह है कि पाठयपुस्तकें कोई दैवी प्रकार की चीजें हैं जिन्हें हमें बिना कोई शंका किए स्वीकार करना है, निगलना और और परीक्षा में वापस उगलना है ।

एक विचार यह है कि प्रत्येक प्रश्न का यह एक ही सही उत्तर होता है और वह सही उत्तर पाठ्यपुस्तकें के शब्दों के बीच हमेशा कहीं छुपा रहता है ।

एक और विचार है कि प्रत्येक प्रभाव किसी एक कारण के द्वारा होता है, यह नहीं कि वह कई सारे कारणों का परिणाम होता है । जबकि अक्सर ऐसा ही होता है ।

कोई शिक्षक किस प्रकार ऐसी धारणाओं का निराकरण कर सकता है ? बच्चों को सवाल करने के लिए प्रोत्साहित करके, खुद प्रयोग द्वारा प्रदर्शित करके और अनुमानों पर चर्चा द्वारा । शिक्षक को खुद अपना निर्णय स्थगित रखकर बच्चों से खूब सारा अभ्यास करवाना चाहिए और किसी नतीजे पर जल्दी से कूदने की बजाय बच्चों के प्रयोग का धेर्य पूर्वक अवलोकन करना चाहिए । शिक्षक को बच्चों से अक्सर यह कहना चाहिए कि ऐसा क्यों है, हम नहीं जानते, और आओ पता करें ।

इन पांच पुस्तकों की श्रृंखला में बच्चों को अनेक अवधारणाएं बनाने ओर कौशल विकसित करने के लिए अवसर है । निश्चय ही, पाठयवस्तु वैज्ञानिक मसलों पर आधारित है किन्तु जोर सदैव पाठ्यवस्तु में दी गई सूचनाओं पर न होकर अवधारणाओं की निर्मिति और कौशलों के विकास पर है ।

अवलोकन, रिकार्डिंग, ऐसी रिकार्डिंग के विश्लेषण और इन विश्लेषणों के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर शुरूआती चरणों में ही जोर दिया गया है । इनके लिए और कई व्यावहारिक कौशल दिए गए है ।

- रेखांकन और अनुकरण-लेखन का अभ्यास
- भाषा के सटीक उपयोग का अभ्यास
- तार्किक संगति के अनुरूप अनुमान लगाना ।
- छपे हुए निर्देशों के अनुसार काम करने का अभ्यास कराना ।

भूमिका में कहा गया है कि बच्चे में वैज्ञानिक ज्ञान के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना ही ऐसी किसी पुस्तक के रूपाकार का निर्धारक होना चाहिए । बच्चों को सीखी हुए अवधारणा और कौशल के अनुप्रयोग के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि बच्चे जो भी पुस्तकों से सीखते हैं उसका दैर्नदिन जीवन और परिवेश में व्यवहार कर सकें ।

पुस्तक में जहां जरूरी समझा गया है, वहां शिक्षक के लिए टिप्पणियां दी गई हैं ।

जीवन को जानें

'जीवन को जानें' (लर्निंग अबाउट लिविंग) पुस्तक शृंखला (पांच किताबें) पर्यावरण-अध्ययन के लिए है जिनमें बच्चें के निकट परिवेश के सभी पहलुओं को समाविष्ट किया गया है । इसी के साथ, जैसा कि पुस्तक शृंखला के नाम से ही स्पष्ट है, इनकी विषयवस्तु में पूरी दुनियां के पर्यावरण की बातें हैं । इस पुस्तक शृंखला में सारत: यह दृष्टिकोण अपनाया गया है :

- शुरुआती पुस्तकों में बच्चे के खुद के अनुभवों को वर्णित किया गया है ।
- यह बच्चों को खुद अपने, अपने दोस्तों और पड़ोसियों के बारे में सूचनाएं एकत्रित करने और इन्हें व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करने में मदद करती हैं ।
- यह बच्चों को कई महत्वपूर्ण और उपयोगी कौशल सीखने और आजमाने का अवसर प्रदान करती हैं, यथा-अनुकृति करना, चित्र बनाना, अवलोकन और रिकार्डिंग, संकलन, मापन और मानचित्रण ।
- यह बच्चे में अपने इर्द-गिर्द की दुनिया की खूबसूरती और उसके रहस्यों के प्रति संवेदन के अनुभव संसार से बाहर की विराट दुनियां के बारे में उसे सहज जिज्ञासु बनाती है ।
- ये विविध प्रकार गतिविधियों का सूत्रपात करती है। प्रत्येक पृष्ठ बच्चे को कुछ न कुछ करने की आवश्यकता लिए है, भले ही इसे वह कक्षा में करे या कक्षा से बाहर । ये पाठ्यपुस्तक में लिखने या चित्रित गतिविधि करने से संबंधित हो सकती है या कक्षा से बाहर, घर या खेल के मैदान में करने के लिए कोई परियोजना हो सकती है ।

इनमें सूचना अर्जित करने की प्रक्रिया बतायी गई है और ऐसे व्यावहारिक कौशल हैं जिन्हें बच्चा दूसरे साथी बच्चों और शिक्षक के साथ खुशी-खुशी सहयोग पूर्वक प्रतिस्पर्धाहीन माहौल में विकसित कर सकता है ।

एक शृंखला के रूप में ये किताबें शहरी और ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में प्रयुक्त की जा सकती हैं । ये किताबें शहरी बच्चों को गांव के बारे में और ग्रामीण बच्चों को शहरों के बारे में बताती हैं।

ये पुस्तकें अपने आसपास की प्रत्येक चीज के प्रति बच्चे को जिज्ञासु और प्रश्नाकुल बनाती है, उसमें सवाल करने की आदत पैदा करती है बच्चे को सूचना उपलब्ध कराने की बजाय उसे सूचना हासिल करना सिखाने की कोशिश की गयी है । जब वह ऐसा करने लगता है तो अपनी खोज के परिणामों को विश्लेषित भी कर सकता है और इस प्रक्रिया से अर्जित ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग कर सकता है ।

यह पुस्तक शृंखला किसी परीक्षण या प्रतिस्पर्धी उपक्रम को अवकाश नहीं देती । बच्चों का समूह में कार्य और एक दूसरे से सीखना सिखाना किसी भी परीक्षा या अंक प्रणाली से कहीं ज्यादा प्रभावी है ।

यहां कंठस्थ कर सीखने का कोई प्रावधान नहीं है ।

Plate 39

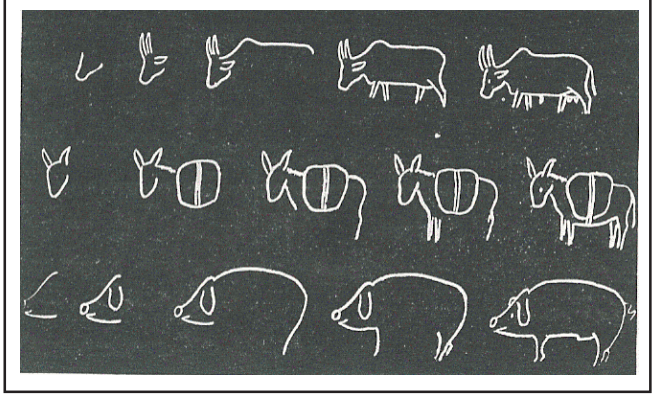

चार लघु नाटक

डेविड ऑसबर्रो ने बच्चों के लिए चार लघु नाटकों की रचना की है । ये नाटक हैं : स्वतंत्रता का नृत्य (डांस आफ फ्रीडम), तेनाली राम और जासूस (तेनालीराम एण्ड दी स्पाई), तीन कदम (द थ्री स्टेप्स) और चार राजा (द फोर किंग्स) । ये चारों नाटक न केवल पढ़ने में रुचिकर हैं बल्कि मंचित किये जा सकते हैं । नाटकों में एक विशेष स्तर की भाषा शैली प्रयुक्त की गयी है जो बच्चे चार-पांच वर्ष से अंग्रेजी सीख रहे हैं, वे इस भाषा का आसानी से व्यवहार कर सकते हैं । नाटकों के अंत में प्रशनोत्तर, चर्चा के लिए बिन्दु, शब्द-सूची, मंच-योजना, प्रदर्शन, मंच-सज्जा और वेशभूषा विषयक सुझावों को संयोजित किया गया है ।

कहानियां

डेविड द्वारा बच्चों के लिए लिखी कहानियों के दो संकलन प्रकाशित हुए हैं -रनवीर और चीता तथा अन्य कहानियां (रनवीर एण्ड दी टाइगर एण्ड अदर स्टोरीज) एवं रॉबिन हुड और अन्य कहानियां (रॉबिन हुड एंड अदर स्टोरीज) । ये कहानियां चौथी से छठी कक्षा स्तर के अंग्रेजी पढ़ने वाले बच्चे पढ़-समझ सकते हैं। संकलनों में परंपरागत और आधुनिक कहानियां हैं जिनमें सामान्य ज्ञान-विज्ञान की जानकारियां और व्यावहारिक गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है । ◆